तिब्बत के नागचु में 7 तीव्रता का भूकंप: 16 मृत, पठार का भूगोल और जोखिम

भूगोल और आपदा | समाचार संदर्भ: 23 अक्टूबर 2026 (AP न्यूज़) | प्रकाशित: 23 अक्टूबर 2026

खबरों में क्यों

चीन के तिब्बत क्षेत्र के नागचु (Nagqu) शहर में 7 तीव्रता के भूकंप से कम से कम 16 लोगों की मृत्यु हुई, 54 घायल हुए और सैकड़ों घर नष्ट हुए (AP, 23 अक्टूबर 2026)। बचाव में 1,600 से अधिक लोग लगे हैं; आने वाले दिनों में बर्फबारी की संभावना के बीच आपातकालीन आश्रय, तंबू और सर्दी-सामग्री पहुँचाई जा रही है। नागचु उच्च-हिमालयी पठार का ठंडा, शुष्क क्षेत्र है।

तिब्बती पठार: भूगोल और जोखिम

- तिब्बत को "विश्व की छत" और "तीसरा ध्रुव" कहा जाता है (तीसरा ध्रुव — उत्तरी-दक्षिणी ध्रुवों के बाद बर्फ की सबसे बड़ी मात्रा वाला क्षेत्र) (सामान्य भूगोल)।
- लगभग 50 मिलियन वर्ष पहले भारतीय और यूरेशियाई प्लेटों की टक्कर से उठा यह पठार "एशिया का जल-भंडार" है — सिंधु, सतलुज, ब्रह्मपुत्र, सालवीन, मेकाँग और यांग्त्सी जैसी नदियाँ यहीं से निकलती हैं, जिनसे एक अरब से अधिक लोगों का जीवन जुड़ा है।
- हिमालय की वर्षा-छाया (rain shadow) के कारण पठार ठंडा और शुष्क है। सक्रिय भूकंपी दरारें (faults), पिघलते ग्लेशियर और गलती हुई पर्माफ्रॉस्ट (permafrost — साल भर जमी रहने वाली मिट्टी-चट्टान की परत) भूकंप, ग्लेशियल झील-फटने (GLOF) और बर्फ-चट्टान भूस्खलन के जोखिम बढ़ाते हैं, जिनके दुष्प्रभाव भारत और नेपाल तक के निचले इलाकों में पहुँच सकते हैं।

संदर्भ और विस्तृत व्याख्या

नागचु भूकंप को तिब्बती पठार की भूवैज्ञानिक प्रकृति में देखना चाहिए। भारतीय और यूरेशियाई प्लेटों की टक्कर आज भी जारी है, इसलिए यह क्षेत्र भूकंपीय रूप से सक्रिय है — दरारों में जमा तनाव समय-समय पर भूकंपों के रूप में मुक्त होता है। ऊँचाई (औसतन 4,500 मीटर से अधिक) और वर्षा-छाया के कारण यहाँ की जलवायु ठंडी व शुष्क है; अधिकांश वर्षा हिमालय की दक्षिणी ढलानों पर ही गिर जाती है। ‘एशिया का जल-भंडार’ कहलाने का कारण यहाँ के विशाल ग्लेशियर और हिम-भंडार हैं, जिनसे सिंधु, सतलुज, ब्रह्मपुत्र, सालवीन, मेकाँग और यांग्त्सी निकलती हैं — इसलिए यहाँ के पर्यावरणीय बदलाव का असर दूर-दूर के देशों तक पहुँचता है। चिंता का एक आयाम यह भी है कि जलवायु-परिवर्तन से पर्माफ्रॉस्ट गल रही है और ग्लेशियर पिघल रहे हैं, जिससे GLOF (ग्लेशियल झील-फटने) जैसी घटनाओं की संभावना बढ़ती है। भूकंप ऐसे संवेदनशील क्षेत्र में द्वितीयक जोखिम — भूस्खलन, झील-फटन, आपूर्ति-मार्ग अवरोध — भी पैदा करता है, जिससे बचाव-कार्य और कठिन हो जाता है।

PCSMANTRA.COM

परीक्षा की दृष्टि से

नागचु-स्थान, तीसरे ध्रुव की परिभाषा, नदियों का उद्गम, प्लेट-टक्कर, GLOF/पर्माफ्रॉस्ट शब्द — प्रिलिम्स भूगोल; हिमालयी जोखिम पर मेन्स-नोट।

स्रोत और सीमाएँ

- AP न्यूज़, 23 अक्टूबर 2026 (पढ़ा): apnews.com समाचार
- **सीमाएँ:** हताहत-आंकड़े 23 अक्टूबर की रिपोर्ट तक के हैं; बचाव-कार्य जारी। पठार-भूगोल सामान्य-ज्ञान अंकित।

PCSMANTRA.COM